RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

कबीर के दर्शन : विभिन्न दर्शनों का प्रभाव

दया शंकर कुमार

यू.जी.सी.–नेट / जे.आर.एफ.–2014

जिस प्रकार प्रत्येक साहित्यकार पर किसी न किसी दार्शनिक परम्पराओं का प्रभाव होता है, उसी प्रकार मेरी दृष्टि में कबीर पर कोई व्यवस्थित दर्शन का प्रभाव तो नहीं है, किन्तु इन्होंने विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं को विस्तारपूर्वक सुने हैं तथा अपनी तर्कशीलता से उन्होंने विभिन्न विचारों का समन्वय किये हैं । यही कारण है कि भारतीय दर्शन के अधिकांश संप्रदाय उनके दर्शन में नजर आ ही जाते हैं; साथ ही इस्लाम और सूफी परम्परा का प्रभाव भी किसी न किसी मात्रा में दिख जाता है। कबीर पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव इस प्रकार है :–

1. नास्तिक दर्शन :–

भारत के नौ दर्शनों में से तीन दर्शन (चार्वाक, जैन तथा बौद्व) नास्तिक मानें जाते हैं क्योंकि वे वेदों की प्रमाणिकता स्वीकार नहीं करते। कबीर पर चार्वाक परम्परा का प्रभाव तो नहीं दिखता किन्तु जैन और बौद्ध दर्शन का प्रभाव देखा जा सकता है।

बौद्ध दर्शन, बुद्ध के बाद हीनयान और महायान में बँट गया था। महायान परम्परा में काफी आगे चलकर वज्रयानी सिद्धों की वाममार्गी साधना पद्धति विकसित हुई जिसका विरोध करते हुए गोरखनाथ ने नाथ परम्परा स्थापित की। चूँकि कबीर का पालन–पोषण नाथ परम्परा के महौल में हुआ था, इसलिए उन पर नाथों के दर्शन तथा हठयोग का पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है। हठयोग में 'ह' का अर्थ चन्द्रमा और 'ठ' का अर्थ सूर्य। सूर्य और चन्द्रमा दो नाड़ियों के लिए प्रयोग होता है इन्हें इड़ा और पिंगला नाम भी दिया जाता है। सूर्य दक्षिण स्वर और चन्द्रमा वाम स्वर कहलाता है। इन्हीं दोनों स्वरों कीसमता का नाम हठयोग है। कबीर पर इसका प्रभाव निम्न प्रकार से नजर आते है :–

क) हर तरह के भोग और लालच को माया कहकर खारिज करना क्योंकि नाथ साधक संयम और ब्रह्मचर्य पर बल देते हैं।

ख) कबीर ने कई स्थानों पर कुण्डलिनी और महाकुण्डलिनी की चर्चा की है और दावा किया है कि वे साधना करते–करते सहस्रार चक्र पर पहुँच गये थे।

ग) जब वे आत्मा और परमात्मा के एकत्व की बात करते हैं तो उनके भीतर कुण्डलिनी और महाकुण्डलिनी के एकत्व की अनुगूंज सुनाई पड़ती है–

"जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी,
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना, इहै तथ कहै गियानी।।"[1]

घ) वर्णव्यवस्था और बाहरी आडम्बरों का जिस आक्रमकता के साथ वे विरोध करते हैं, चूँकि कबीर निम्न वर्ग के होने के कारण उन्होंने इसका भोगी हुआ यर्थाथ को अपने शब्दों के रूप में प्रकट करते है, यह भी नाथ परम्परा की ही देन नजर आता है:–

"पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते यह चक्की भली, पीस खाय संसार।।"[2]

जैन दर्शन का प्रभाव बहुत ज्यादा मात्रा में तो नहीं दिखता किंतु सीमित स्तर पर जरूर विद्यमान है। अहिंसा और करूणा पर यूँ तो बौद्ध धर्म में भी बल दिया गया हैं किन्तु उतना नहीं जितना जैन परम्परा में। कबीर ने अपनी कई कविताओं में प्राणीमात्र के प्रति संवेदना और करूणा प्रदर्शित की है :–

"संतो पाण्डे निपुन कसाई।
बकरा मारि भैंसा पर धावै, दिल में दर्द न आई।।"[3]

2. षडदर्शन :–

भारत के छः आस्तिक दर्शनों (अर्थात् वेदों को प्रमाणिक मानने वाले छः दर्शनों) को ही 'षडदर्शन' तथा 'हिन्दू दर्शन' की संज्ञा दी जाती है। जो इस प्रकार है – न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा तथा वेदान्त। वेदान्त की दो प्रमुख शाखाएँ हैं – अद्वैत वेदान्त तथा वैष्णव वेदान्त। कबीर पर सबसे ज्यादा प्रभाव अद्वैत वेदान्त का है । यह कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि कबीर ने अद्वैतवाद को ही मूल दर्शन के रूप में स्वीकारा है। इसके निम्नलिखित प्रभाव कबीर के दर्शन पर देखे जा सकते हैं–

क) ब्रह्म को निगुर्ण मानना।

ख) जगत को मिथ्या तथा सारहीन मानना।

ग) आत्मा तथा ब्रह्म के एकत्व का निरूपण करना।

घ) माया की व्याख्या प्रपंच उत्पन्न करने वाली शक्ति के रूप में करना।

वैष्णव वेदान्त का ज्यादा तो नहीं किंतु थोड़ा प्रभाव दिखता है। वे विशिष्टाद्वैतवाद के प्रवर्तक आचार्य रामानुज की शिष्य परम्परा में शामिल आचार्य रामानन्द से परिचित हुए थे,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अन्य वैष्णव वेदांतियों जैसे वल्लवाचार्य आदि से उनका नहीं था। रामानन्द का प्रभाव इस प्रकार दिखता है–

क) राम का नाम उन्होंने रामानन्द से ही लिया चाहे धारणा को बदल दिया हो।

ख) प्रपत्तिवाद का प्रभाव भी कबीर पर है जो इसी परम्परा से आया है।

ग) गुरू–भक्ति की भावना पर नाथ परंपरा का भी प्रभाव है किन्तु ज्यादा प्रभाव वैष्णवों का है।

घ) पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम का भाव जैन परम्परा के साथ वैष्णव परम्परा में भी रहा है।

ड़) शंकर के दर्शन को मानने के बावजूद साधना पद्धति में ज्ञानमार्ग को खारिज करके भक्ति के रास्ते को चुनना कहीं न कहीं वैष्णव परम्परा का ही असर है।

जहाँ तक शेष दर्शनों का प्रश्न है, कबीर पर उनका कोई विशेष प्रभाव नहीं है। इतना जरूर है कि सांख्य और योग दर्शन की कुछ बातें कबीर में देखी जा सकती हैं। सांख्य और योग में प्रकृति के तीन गुणों (सत्व, रजस और तमस) को बंधन का मूल कारण बताया गया है और कबीर ने भी माया को त्रिगुणात्मक बताया है– "तिरगुन फाँस लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी।"[4]

इसी प्रकार, महर्षि पातंजलि के योग दर्शन को आधार बनाकर ही नाथों ने हठयोग पद्धति की शुरूआत की थी और चूँकि हठयोग को कबीर ने भी स्वीकार किया है, इस अर्थ में योग दर्शन का असर देखा जा सकता है। शेष आस्तिक दर्शन भी जगत को बंधन का कारण मानते हैं, मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानते हैं– ये सभी बातें कबीर के दर्शन से जुड़ती हैं।

3. इस्लाम दर्शन :–

कबीर पर इस्लाम का काफी प्रभाव है। आचार्य शुक्ल के अनुसार – "कबीर जब किसी पण्डे को फटकारते हैं तो लगता है कि उन पर पैगंबरी खुदावाद का प्रभाव है।"[5] परन्तु यह मत पूर्णतः उचित नहीं है। कबीर ने इस्लाम और हिन्दू दोनों धर्मों के कर्मकाण्डों और आडम्बरों पर चोट की है। इस्लाम का जो प्रभाव ठीक तरीके से माना जा सकता है, वह है समतामूलक विचारधारा। चूँकि इस्लाम सभी मनुष्यों को समान मानता है और कबीर जिस दलित वर्ग की आवाज़ उठाना चाहते थे उसके लिए यह विचार बहुत उत्प्रेरक था; इसलिए यह प्रभाव देखा जा सकता है :–

"जाति पाति पूछे नहिं कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।"[6]

4. सूफी दर्शनः–

सूफियों का प्रभाव कबीर पर काफी ज्यादा है। सूफी लोग जिस भावनात्मक रहस्यवाद को लेकर यहाँ आए, वह कबीर को बेहद पसंद आया। ईश्वर के साथ प्रेम और मस्ती का भाव सूफियों के तसव्वुफ का प्रभाव है, उसे नवधा भक्ति के अन्तर्गत सख्य भक्ति कहकर काम नहीं चलाया जा सकता। कबीर के विरह में जो तड़प है और मिलन में जो मस्ती का चरम भाव है, वह सूफियों से ही प्रेरित हैः–

"तलफै बिनु बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहीं निंदिया, तलफ–तलफ कै भोर किया।।"[7]

अंततः कहा जा सकता है कि कबीर के दर्शन उनके व्यक्तित्व की ही तरह बहुमुखी है। वे सभी से प्रभावित होकर भी अपने संघटन में मौलिक है। उनके विचार और उद्‌गार इतने सुगठित हैं कि उन पर कभी किसी तरह का प्रहार नहीं किया जा सकता है। कबीर के दर्शन मध्ययुग में जितना उपयोगी रहा था आज उससे भी ज्यादा ग्राह्य एवं अनुकरनीय हैं । कबीर का समाज दर्शन मनुष्य के बाह्य जीवन को नैतिक आचरण की मर्यादा को बांधने वाला, उसके मन का परिष्कार करने वाला और उसकी आत्मा को विश्वात्मा में लय करके, उसे सच्चे मानव धर्म के ऊँचाई तक पहुँचाने वाला है। वास्तविकता तो यह है कि उन्होंने मनुष्य मात्र में एक ही दिव्य ईश्वरीय ज्योति के दर्शन किये थे तथा इसी आधार पर मानव मात्र की एकता का प्रतिपादन किया था।

संदर्भ :

1. श्याम सुन्दरदास/कबीर ग्रंथावली, पद 44
2.पाण्डेय(डॉ.) गौरी शंकर/अवध अर्चना कबीर अंक/अगस्त–सितम्बर–अक्टूबर 2002/पृष्ठ 25
3.पं(डॉ) लक्ष्मीदत बी./संत कबीर/सन् 1977/पृष्ठ 269
4.मिश्र रमेश चंद्र/कबीर अकेला/सन् 1999/पृष्ठ 104
5.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल/हिन्दी शब्द सागर की भूमिका/सन् 1929
6.पाण्डेय(डॉ.) गौरी शंकर/अवध अर्चना कबीर अंक/अगस्त–सितम्बर–अक्टूबर 2002/पृष्ठ 25
7.साहब (आचार्य) गृन्धमुनि नाम/सद्‌गुरू कबीर ज्ञानपयोगनिधि/सन् 2001/पृष्ठ.104

© RRIJM 2015, All Rights Reserved